इकाई 34 स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन (भारतेंदु हरिश्चंद्र) : वाचन और विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

34.0 उद्देश्य
34.1 प्रस्तावना
34.2 निबंध का वाचन : स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन
34.3 निबंध का सार
34.4 संदर्भ सहित व्याख्या
34.5 निबंध की अंतर्वस्तु
34.6 लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
34.7 संरचना-शिल्प
34.8 प्रतिपाद्य
34.9 सारांश
34.10 शब्दावली
34.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

34.0 उद्देश्य

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के ऐच्छिक पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' के छठे खंड 'हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ' की यह दूसरी और पाठ्यक्रम की चौंतीसवीं इकाई है। इस इकाई में आप आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र का निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद:

- आप इस निबंध का सार अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकेंगे;
- निबंध के प्रमुख अंशों की व्याख्या प्रस्तुत कर सकेंगे;
- निबंध की अंतर्वस्तु की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- निबंध पर लेखकीय व्यक्तित्व के प्रभाव की विवेचना कर सकेंगे; और
- निबंध के संरचना-शिल्प यानी भाषा और शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे।

34.1 प्रस्तावना

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के ऐच्छिक पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' (बी.एच.डी.ई.-101) के छठे खंड की यह दूसरी इकाई और पाठ्यक्रम की 34वीं इकाई है। इसी खंड की पहली इकाई (इकाई संख्या 33) में आपने हिंदी के कथेतर गद्य विधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। उक्त इकाई में आपने निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्तांत आदि विधाओं का अध्ययन किया था। इस इकाई में आप भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रसिद्ध निबंध 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन' का अध्ययन करेंगे।

यह निबंध भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिका 'कविवचन सुधा' के अंक 8 में पहली बार छपा था जो 1 जून, 1885 को प्रकाशित हुआ था और 'मित्रविलास' के खंड 8 संख्या 40 में 19 जून, 1885 को प्रकाशित हुआ था। यह व्यंग्य निबंध उन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) और केशवचंद्र सेन (1838-1884) की मृत्यु के बाद लिखा था। इस निबंध में यह कल्पना की गयी है कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती और प्रख्यात ब्राह्म समाजी केशवचंद्र सेन जब स्वर्ग पहुंचे तो वहां किस तरह की स्थितियां पैदा हुईं। यह एक व्यंग्य निबंध है और इसका अंग्रेजी में अनुवाद 'क्रानिकल' में प्रकाशित हुआ था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म बनारस के एक संपन्न परिवार में 9 सितंबर, 1850 को हुआ था। उनके पिता का नाम गोपाल चंद्र था जो स्वयं भी कवि थे और गिरधरदास के नाम से कविता लिखते थे। भारतेंदु का नाम हरिश्चंद्र था और देश, समाज और साहित्य में योगदान के कारण ही उन्हें भारतेंदु

कहा जाने लगा था। भारतेंदु का प्रारंभिक जीवन सामंती वैभव और विलास से परिपूर्ण था। लेकिन पाँच वर्ष की उम्र में उनकी माता का देहावसान हो गया और दस वर्ष की उम्र में पिता भी चल बसे।

भारतेंदु ने क्वींस कॉलेज में प्रवेश लिया था लेकिन कॉलेज की शिक्षा में उनका मन नहीं लगा। वे स्वाध्याय में ज्यादा यकीन करते थे। उन्होंने मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू आदि भाषाएँ भी सीखीं। उर्दू में वे रसा उपनाम से शायरी भी करते थे। उन्होंने शिवप्रसाद सितारेहिंद से अंग्रेजी भी सीखी थी। 13 वर्ष की उम्र में उनका विवाह हो गया था। उन्होंने बंगाल से लेकर पंजाब तक की यात्राएं कीं जिससे उन्हें अपने देश को जानने-समझने का मौका मिला। महज पैंतीस वर्ष की अवस्था में उनका 6 जनवरी, 1885 को देहावसान हो गया था।

भारतेंदु की प्रतिभा चौमुखी थी। वे व्यक्ति नहीं संस्था थे। पत्रकारिता का क्षेत्र हो, साहित्य का हो या समाज सेवा का, उनकी भूमिका अग्रणी होती थी। वे अत्यंत जीवंत और मित्रपरायण व्यक्ति थे।

भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्त्तक के रूप में जाना जाता है। उनके योगदान को देखकर ही हिंदी साहित्य के इतिहास में उस दौर को 'भारतेंदु युग' नाम दिया गया है। भारतेंदु के साहित्य में परंपरा और आधुनिकता का संयोग दिखायी देता है। उन्होंने यदि कविता में भक्ति और रीतिकालीन परंपराओं का अनुकरण करते हुए वैसी ही कविताएं लिखीं तो उन्होंने आधुनिक भावबोध से प्रेरित कविताएं भी लिखीं। इसी तरह गद्य लेखन में उन्होंने अपने समय के ज्वलंत प्रश्नों को उठाया और उन पर नाटक और निबंध लिखे। उन्होंने 1868 में 'कविवचन सुधा' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नामक मासिक पत्रिका निकाली। बाद में उन्होंने इस पत्रिका का नाम 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया। 1874 में उन्होंने स्त्रियों के लिए 'बालाबोधिनी' नामक पत्रिका निकाली। कविता और निबंध के अतिरिक्त उन्होंने बहुत से नाटक भी लिखे। उनके प्रसिद्ध नाटकों में वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873), चंद्रावली (1876), विषस्य विषमौशधम, भारत दुर्दशा (1876), नीलदेवी (1881), अंधेर नगरी (1881) आदि हैं। उन्होंने बांग्ला और संस्कृत के कई नाटकों का अनुवाद भी किया।

निबंध भारतेंदु युग की एक प्रमुख विधा है और उसमें भी व्यंग्य भारतेंदु युग की प्रमुख विशेषता रही है। भारतेंदु ने व्यंग्य का सहारा नाटकों, निबंधों और कविता में भी लिया है। पाठ्यक्रम में शामिल निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' एक व्यंग्य निबंध है। इसमें उस दौर के दो सुधारवादी संगठनों ब्राह्म समाज और आर्य समाज के मतभेदों को व्यंग्य का आधार बनाया है। इस निबंध पर और विस्तार से विचार करने से पहले आइए, निबंध को पढ़ें।

34-2 fuc/k dk okpu % Lox esa fopkj lHkk dk vf/ko'ku

स्वामी दयानंद सरस्वती और बाबू केशवचंद्रसेन के स्वर्ग में जाने से वहाँ एक बार बड़ा आंदोलन हो गया। स्वर्गवासी लोगों में बहुतेरे तो इनसे घृणा करके धिक्कार करने लगे और बहुतेरे इनको अच्छा कहने लगे। स्वर्ग में भी 'कंसरवेटिव' और 'लिबरल' दो दल हैं। जो पुराने जमाने के ऋषिमुनि यज्ञ करके या तपस्या करके अपने-अपने शरीर को सुखा-सुखा कर और पच-पच कर मरके स्वर्ग गए हैं उनके आत्मा का दल 'कंसरवेटिव' है, और जो अपनी आत्मा ही की उन्नति सेवा और किसी अन्य सार्वजनिक उच्च भाव संपादन करने से या परमेश्वर की भक्ति से स्वर्ग में गए हैं वे 'लिबरल' दलभक्त हैं। वैष्णव दोनों दल के क्या दोनों से खारिज थे, क्योंकि इनके स्थापकगण तो लिबरल दल के थे किंतु अब ये लोग 'रेडिकल्स' क्या महा-महा रेडिकल्स को गए हैं। बेचारे बूढ़े व्यासदेव को दोनों दल के लोग पकड़-पकड़ कर ले जाते और अपनी-अपनी सभा का 'चेयरमैन' बनाते थे, और बेचारे व्यासजी भी अपने प्राचीन अव्यवस्थित स्वभाव और शील के कारण जिस की सभा में जाते थे वैसी ही वक्तृता कर देते थे। कंसरवेटिवों का दल प्रबल था; इसका मुख्य कारण यह था कि स्वर्ग के जमींदार इन्द्र, गणेश प्रभृति भी उनके साथ योग देते थे, क्योंकि बंगाल के ज़मींदारों की भाँति उदार लोगों की बढ़ती से उन बेचारों को विविध सर्वोपरि बलि और मान न मिलने का डर था।

कई स्थानों पर प्रकाश सभा हुई। दोनों दल के लोगों ने बड़े आतंक से वक्तृता दी। 'कंसरवेटिव' लोगों का पक्ष समर्थन करने को देवता भी आ बैठे और अपने-अपने लोकों में भी

उस सभा की शाखा स्थापना करने लगे। इधर 'लिबरल' लोगों की सूचना प्रचलित होने पर मुसलमानी-स्वर्ग और जैन-स्वर्ग तथा क्रिस्तानी-स्वर्ग से पैगंबर, सिद्ध, मसीह प्रभृति हिन्दू-स्वर्ग में उपस्थित हुए और 'लिबरल' सभा में योग देने लगे। बैकुंठ में चारों ओर इस की धूम फैल गई। 'कंसरवेटिव' लोग कहते, ''छिः दयानंद कभी स्वर्ग में आने के योग्य नहीं; इसने 1) पुराणों का खंडन किया, 2) मूर्ति पूजा की निंदा किया, 3) वेदों का अर्थ उलटा-पुलटा कर डाला, 4) दश नियोग करने की विधि निकाली, 5) देवताओं का अस्तित्व मिटाना चाहा, 6) और अंत में संन्यासी होकर अपने को जलवा दिया। नारायण! नारायण! ऐसे मनुष्य की आत्मा को कभी स्वर्ग में स्थान मिल सकता है, जिसने ऐसा धर्म विप्लव कर दिया और आर्यावर्त को धर्म बहिर्मुख किया।''

एक सभा में काशी के विश्वनाथ जी ने उदयपुर के एकलिंग जी से पूछा ''भाई! तुम्हारी क्या मत मारी गई जो तुमने ऐसे पतित को अपने मुंह लगाया और अब उसके दल के सभापति बने हो, ऐसा ही करना है तो जाओ लिबरल लोगों से योग दो।'' एकलिंग जी ने कहा ''भाई, हमारा मतलब तुम लोग नहीं समझे। हम उसकी बुरी बातों को न मानते न उसका प्रचार करते, केवल अपने यहाँ के जंगल की सफाई का कुछ दिन उसके ठेका दिया, बीच में वह मर गया अब उसका माल मता ठिकाने रखवा दिया तो उसका बुरा किया।''

कोई कहता 'केशवचंद्रसेन! छि छि! इसने सारे भारतवर्ष का सत्यानाश कर डाला। 1) वेद-पुराण सब को मिटाया, 2) क्रिस्तान मुसलमान सब को हिन्दू बनाया, 3) खाने-पीने का विचार कुछ न बाकी रक्खा, 4) मद्य की तो नदी बहा दी। हाय-हाय ऐसी आत्मा क्या कभी बैकुंठ में आ सकती है।''

ऐसे ही दोनों की जीवन की समालोचना चारों ओर होने लगी।

लिबरल लोगों की सभा भी बड़ी धूमधाम से जमती थी। किंतु इस सभा में दो दल हो गए थे, एक जो केशव की विशेष स्तुति करते, दूसरे वे जो दयानंद को विशेष आदर देते थे। कोई कहता, अहा धन्य दयानंद जिसने आर्यावर्त के निंदित आलसी मूर्खों की मोह निद्रा भंग कर दी। हजारों मूर्खों को ब्राह्मणों के (जो कंसरवेटिवों के पादरी और व्यर्थ प्रजा का द्रव्य खाने वाले हैं) फंदे से छुड़ाया। बहुतों को उद्योगी और उत्साही कर दिया। वेद में रेल, तार, कमेटी, कचहरी दिखाकर आर्यों की कटती हुई नाक बचा ली। कोई कहता धन्य केशव! तुम साक्षात् दूसरे केशव हो। तुमने बंग देश की मनुष्य नदी के उस वेग को, जो कृश्चन समुद्र में मिल जाने को उच्छलित हो रहा था, रोक दिया। ज्ञानकर्म का निरादर करके परमेश्वर का निर्मल भक्ति मार्ग तुमने प्रचलित किया।

कंसरवेटिव पार्टी में देवताओं के अतिरिक्त बहुत लोग थे जिनमें, याज्ञवल्क्य प्रभृति कुछ तो पुराने ऋषि थे और कुछ नारायणभट्ट, रघुनंदनभट्टाचार्य, मंडनमिश्र प्रभृति स्मृति ग्रंथकार थे। सुना है कि विदेशी स्वर्ग के कुछ 'शीआ' लोगों ने भी इनके साथ योग दिया है।

लिबरल दल में चैतन्य प्रभृति आचार्य, दादू, नानक, कबीर प्रभृति भक्त और ज्ञानी लोग थे। अद्वैतवादी भाष्यकार आचार्य पंचदशीकार प्रभृति पहले दलमुक्त नहीं होने पाए। मिस्टर ब्रैडला की भाँति इन लोगों पर कंसरवेटिवों ने बड़ा आक्षेप किया किंतु अंत में लिबरलों की उदारता से उनके समाज में इनको स्थान मिला था।

दोनों दलों के मेमोरियल तैयार कर स्वाक्षरित होकर परमेश्वर के पास भेजे गए। एक में इस बात पर युक्ति और आग्रह प्रगट किया था कि केशव और दयानंद कभी स्वर्ग में स्थान न पावैं और दूसरे में इसका वर्णन था कि स्वर्ग में इनको सर्वोत्तम स्थान दिया जाय।

ईश्वर ने दोनों दलों के डेप्यूटेशन को बुलाकर कहा ''बाबा अब तो तुम लोगों की 'सैल्फगवर्नमेंट' है। अब कौन हमको पूछता है, जो जिसके जी में आता है करता है। अब चाहे वेद क्या संस्कृत का अक्षर भी स्वप्न में भी न देखा हो पर धर्म विषय पर वाद करने लगते हैं। हम तो केवल अदालत या व्यवहार या स्त्रियों के शपथ खाने को ही मिलाए जाते हैं। किसी को हमारा डर है? कोई भी हमारा सच्चा 'लायक' है? भूतप्रेत ताजिया के इतना भी तो हमारा दरजा नहीं बचा। हम को क्या काम चाहे 'बैकुंठ में' कोई आवे। हम जानते हैं चारों लड़कों (सनक आदि) ने पहले ही से चाल बिगाड़ दी है। क्या हम अपने बिचारे जय-विजय को फिर राक्षस बनवावें कि किसी का रोकटोक करें। चाहें सगुन मानो चाहे निर्गुन, चाहे द्वैत मानो चाहे अद्वैत, हम अब न बोलेंगे। तुम जानो स्वर्ग जाने।''

डेप्यूटेशन वाले परमेश्वर की ऐसी कुछ खिजलाई हुई बात सुनकर कुछ डर गए। बड़ा निवेदन सिवेदन किया। कोई प्रकार से परमेश्वर का रोष शांत हुआ। अंत में, परमेश्वर ने इस विषय के विचार के हेतु एक 'सिलेक्ट कमेटी' स्थापन की। इसमें राजा राममोहन राय, व्यासदेव, टोडरमल, कबीर प्रभृति भिन्न-भिन्न मत के लोग चुने गए। मुसलमानी-स्वर्ग से एक 'इमाम', क्रिस्तानी से 'लूथर', जैनी से पारसनाथ, बौद्धों से नागार्जुन और अफ्रीका से सिटोवायो के बाप को इस कमेटी का 'एक्स अफीशियो मेंबर' किया। रोम के पुराने 'हरकुलिस' प्रभृति देवता तो अब गृह संन्यास लेकर स्वर्ग ही में रहते हैं और पृथ्वी से अपना संबंध मात्र छोड़ बैठे हैं, तथा पारसियों के 'जरदुश्तजी' को 'कारेस्पांडिग आनरेरी मेंबर' नियत किया और आज्ञा दिया कि तुम लोग इस सब कागज पत्र देखकर हम को रिपोर्ट करो। उनकी ऐसी भी गुप्त आज्ञा थी कि एडिटरों की आत्मागण को तुम्हारी किसी 'काररवाई' का समाचार तब तक न मिलै जब तक कि रिपोर्ट हम न पढ़ लें नहीं ये व्यर्थ चाहे कोई सुनै चाहे न सुनै अपनी टॉय टॉय मचा ही देंगे।

सिलेक्ट कमेटी का कोई अधिवेशन हुआ। सब कागज पत्र देखे गए। दयानन्दी और कैशवी ग्रंथ तथा उनके अनेक प्रत्युत्तर और बहुत से समाचार पत्रों का मुलाहिजा हुआ। बालशास्त्री प्रभृति कई कंसरवेटिव और द्वारकानाथ प्रभृति लिबरल नव्य आत्मागणों की इस में साक्षी ली गई। अंत में कमेटी या कमीशन ने जो रिपोर्ट किया उसकी मर्म बात यह थी किः

''हम लोगों की इच्छा न रहने पर भी प्रभु की आज्ञानुसार हम लोगों ने इस मुकदमे के सब कागज पत्र देखे। हम लोगों ने इन दोनों मनुष्यों के विषय में जहाँ तक समझा और सोचा है निवेदन करते हैं। हम लोगों की सम्मति में इन दोनों पुरुषों ने प्रभु की मंगलमयी सृष्टि का कुछ विघ्न नहीं किया वरंच उस में सुख और संतति अधिक हो इसी में परिश्रम किया। जिस चंडाल रूपी आग्रह और कुरीति के कारण मनमाना पुरुष धर्मपूर्वक न पाकर लाखों स्त्री कुमार्ग गामिनी हो जाती हैं, लाखों विवाह होने पर भी जन्म भर सुख नहीं भोगने पातीं, लाखों गर्भ नाश होते और लाखों ही बाल हत्या होती है, उसी पापमयी परम नृशंस रीति को इन लोगों ने उठा देने में अपने शक्यभर परिश्रम किया। जन्मपत्री की विधि के अनुग्रह से जब तक स्त्री पुरुष जीऐं एक तीर घाट एक मीर घाट रहैं, बीच में इस वैमनस्य और असंतोष के कारण स्त्री व्यभिचारिणी पुरुष विषयी हो जायं, परस्पर नित्य कलह हो, शांति स्वप्न में भी न मिलै, वंश न चलै, यह उपद्रव इन लोगों से नहीं सहे गये। विधवा गर्भ गिरावै, पंडित जी या बाबू साहब यह सह लेंगे, वरंच चुपचाप उपाय भी करा देंगे, पाप को नित्य छिपावेंगे, अंततोगत्वा निकल ही जायँ तो संतोष करेंगे, इस दोष को इन दोनों ने निःसंदेह दूर करना चाहा। सवर्ण पात्र न मिलने से कन्या को वर मूर्ख अंधा वरंच नपुंसक मिले तथा वर को काली कर्कशा कन्या मिले जिसके आगे बहुत बुरे परिणाम हों, इस दुराग्रह को इन लोगों ने दूर किया। चाहे पढ़े हों चाहे मूर्ख, सुपात्र हो कि कुपात्र, चाहे प्रत्यक्ष व्यभिचार करें या कोई भी बुरा कर्म करें, पर गुरु जी हैं, पंडित जी हैं, इनका दोष मत कहो, कहोगे तो पतित होगे, इनको दो, इनको राजी रक्खो; इन सत्यानाश संस्कार को इन्होंने दूर किया। आर्य जाति दिन-दिन ह्रास हो, लोग स्त्री के कारण, धन के वा नौकरी व्यापार आदि के लोभ से, मद्यपान के चसके से, बाद में हार कर राजकीय विद्या का अभ्यास करके मुसलमान या क्रिस्तान हो जायँ, आमदनी एक मनुष्य की भी बाहर से न हो केवल नित्य व्यय हो, अंत में आर्यों का धर्म और जाति कथाशेष रह जाय, किंतु जो बिगड़ा सो बिगड़ा फिर जाति में कैसे आवेगा, कोई भी दुष्कर्म किया तो छिपके क्यों नहीं किया, इसी अपराध पर हजारों मनुष्य आर्य पंक्ति से हर साल छूटते थे, उसको इन्होंने रोका। सब से बढ़ कर इन्होंने यह कार्य किया, सारा आर्यावर्त जो प्रभु से विमुख हो रहा था, देवता बिचारे तो दूर रहे, भूत प्रेत पिशाच मुरदे, साँप के काटे, बाघ के मारे, आत्महत्या करके मरे, जल, दब या डूब कर मरे लोग, यही नहीं मुसलमानी पीर पैगंबर औलिया शहीद वीर ताजिया, ... उनको मानने और पूजने लग गए थे। देखते सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आर्य हैं, किससे उत्पन्न हैं, इस दुराचार की ओर से लोगों का अपनी वक्तृताओं के थपेड़े के बल से मुँह फेर कर सारे आर्यावर्त को शुद्ध 'लायल' कर दिया।

'भीतरी चरित्र में इन दोनों के जो अंतर हैं' वह भी निवेदन कर देना उचित है। दयानंद की दृष्टि हम लोगों की बुद्धि में अपनी प्रसिद्धि पर विशेष रही। रंग रूप भी इन्होंने कई बदले। पहले केवल भागवत का खंडन किया। फिर सब पुराणों का। फिर कई ग्रंथ माने कई छोड़े। अपने काम के प्रकरण माने, अपने विरुद्ध को क्षेपक कहा। पहले दिगंबर मिट्टी पोते महात्यागी थे। फिर संग्रह करते-करते सभी वस्त्र धारण किये। भाष्य में भी रेल तार आदि कई अर्थ जबरदस्ती

किए। इसी से संस्कृत विद्या को भली भाँति न जानने वाले ही प्रायः इनके अनुयायी हुए। जाल को छुरी से न काट कर दूसरे जाल ही से जिस को काटना चाहा इसी से दोनों आपस में उलझ गए और इसका परिणाम गृह-विच्छेद उत्पन्न हुआ।

''केशव ने इनके विरुद्ध जाल काटकर परिष्कृत पथ प्रकट किया। परमेश्वर से मिलने-मिलाने की आड़ या बहाना नहीं रखा। अपनी भक्ति की उच्छलित लहरों में लोगों का चित्त आर्द्र कर दिया। यद्यपि ब्राह्म लोगों में सुरा मांसादि का प्रचार विशेष है किंतु इसमें केशव का दोष नहीं। केशव अपने अटल विश्वास पर खड़ा रहा। यद्यपि कूच बिहार के संबंध करने से और यह कहने से कि ईशामसीह आदि उससे मिलते हैं, अंतावस्था के कुछ पूर्व उनके चित्त की दुर्बलता प्रकट हुई थी, किंतु वह एक प्रकार का उन्माद होगा वा जैसे बहुतेरे धर्म प्रचारकों ने बहुत बड़ी बातें ईश्वर की आज्ञा बतला दी वैसे ही यदि इन बेचारे ने एक दो बात कही तो क्या पाप किया। पूर्वोक्त कारणों से ही केशव का मरने पर जैसा सारे संसार में आदर हुआ वैसा दयानंद का नहीं हुआ। इस के अतिरिक्त इन लोगों के हृदय के भीतर छिपा कोई पुण्य पाप रहा हो तो उस को हम लोग नहीं जानते इस का जानने वाला केवल तू ही है।

इस रिपोर्ट पर विदेशी मेंबरों ने कुछ क्रुद्ध होकर हस्ताक्षर नहीं किया ।

रिपोर्ट परमेश्वर के पास भेजी गयी। इस को देखकर इस पर क्या आज्ञा हुई और वे लोग कहाँ भेजे गए यह जब हम भी वहाँ जाएँगे और फिर लौट कर आ सकेंगे तो पाठक लोगों को बतलावेंगे। या आप लोग कुछ दिन पीछे आप ही जानोगे।

34-3 fucU/k dk lkj

भारतेंदु हरिश्चंद्र का निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' एक वैचारिक निबंध है जो व्यंग्य शैली में लिखा गया है। भारतेंदु उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में लेखन में सक्रिय थे। यह वह दौर था जब देश पर अंग्रेजों का शासन था। देश में अंग्रेजों ने शिक्षा, न्याय, प्रशासन आदि के क्षेत्र में एक नयी तरह की व्यवस्था स्थापित की थी जो इससे पूर्व की व्यवस्थाओं से बिल्कुल भिन्न प्रकार की थी। अंग्रेजों के संपर्क में आने से शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान के नये आलोक से भारतीयों को भी यह लगने लगा कि हमारी गुलामी का कारण हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़िवादिता में निहित है। धर्म के नाम पर तरह-तरह के अंधविश्वास और कुरीतियां फैली हुई थीं। हिंदू समाज जातिवाद के दलदल में फंसा हुआ था और अपने ही समाज के निम्न कहे जाने वाले वर्ग के साथ पशु से भी बदतर व्यवहार किया जाता था। स्त्रियों की दशा भी बहुत दयनीय थी। उनका बहुत छोटी उम्र में विवाह कर दिया जाता था और पति की मृत्यु के बाद या तो उन्हें विधवा के रूप में नारकीय जीवन जीना पड़ता था या सती प्रथा के नाम पर पति के साथ जिंदा जला दिया जाता था। स्त्रियों में शिक्षा का पूरी तरह से अभाव था। इनमें से कई कुरीतियां दूसरे धार्मिक समुदायों में भी प्रचलित थीं। इन्हीं परिस्थितियों ने उन्नीसवीं सदी के आरंभ से ही समाज सुधार के लिए प्रयत्न होने लगे। राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खां आदि ने देश को इन कुरीतियों से मुक्त कराने का प्रयास किया। उनकी इन्हीं कोशिशों के कारण इस पूरे दौर को रिनांसा या नवजागरण का दौर कहा जाता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र भी इसी दौर की उपज थे। उन्होंने अपने लेखन, पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा समाज सुधार के इस आंदोलन को आगे बढ़ाया था। अपने कई समकालीन लेखकों जैसे प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी आदि को उन्होंने इस कार्य के लिए प्रेरित किया। लेकिन इस दौर में समाज सुधार के जो आंदोलन चल रहे थे, उनमें सभी मुद्दों पर एकता नहीं थी। खासतौर पर ब्राह्म समाज और आर्यसमाज कई मुद्दों पर एक दूसरे से भिन्न राय रखते थे। ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता केशवचंद्र सेन और आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती की मृत्यु बहुत थोड़े से अंतराल में हुई थी। दयानंद की मृत्यु 1983 में और केशवचंद्र की मृत्यु 1984 में हुई थी। इन दोनों की मृत्यु के बाद की स्थितियों से ही यह निबंध प्रेरित है। भारतेंदु एक ऐसी स्थिति की कल्पना करते हैं जब दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन दोनों स्वर्ग पहुंच जाते हैं। पृथ्वी की तरह वहां भी कंजरवेटिवों यानी अनुदारवादियों और लिबरलों यानी उदारवादियों के दो समूह बन जाते हैं। दयानंद और केशवचंद्र दोनों के समर्थकों को भारतेंदु लिबरल समूह में रखते हैं। लेकिन इस लिबरल समूह में वे दो अलग-

अलग दलों की कल्पना करते हैं, एक दयानंद सरस्वती का समर्थक दल और एक केशवचंद्र सेन का समर्थक दल। इसके बाद वे कल्पना करते हैं कि स्वर्ग में कंजरवेटिवों और लिबरलों के आपसी झगड़े को सुलझाने के लिए वे परमेश्वर के पास जाते हैं और उनसे हस्तक्षेप की मांग करते हैं। वे अपना-अपना मांगपत्र पेश करते हैं जिनमें एक दल मांग करता है कि केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती को स्वर्ग में जगह न दी जाए जबकि दूसरे दल का आग्रह था कि इन्हें स्वर्ग में सर्वोत्तम स्थान दिया जाए। पहले तो भगवान इस मामले में पड़ने से इन्कार करते हैं और कहते हैं कि वे अपने मसले खुद हल करें लेकिन जब दोनों दल उनसे अनुनय-विनय करते हैं तो वे मान जाते हैं। इस समस्या पर विचार करने के लिए वे एक 'सिलेक्ट कमिटी' बनाते हैं। जिनमें लिबरल और कंजरवेटिव दोनों गुटों में से प्रतिनिधि रखते हैं। उनमें अन्य धर्मों के प्रतिनिधियों को भी स्थान देते हैं। उन्हें इस बात से सावधान भी करते हैं कि वे संपादकों की आत्माओं से सावधान रहें और उन्हें किसी बात की जानकारी तब तक न मिले जब तक यह सिलेक्ट कमिटी परमेश्वर को अपनी रिपोर्ट न सौंप दे क्योंकि वे व्यर्थ की चिल्लपों मचायेंगे। यह सिलेक्ट कमिटी एक अधिवेशन करती है। दोनों के विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन करती है, संबंधित समाचारपत्रों का अध्ययन भी करती है और इस तरह दोनों पक्षों के बारे में पूरी जानकारी हासिल करती है। इसके बाद कमिटी या कमीशन एक रिपोर्ट तैयार करती है और उसे परमेश्वर को सौंप देती है। इस रिपोर्ट में स्वामी दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन के योगदान को सराहा जाता है। उन्हें इस बात का श्रेय दिया जाता है कि आर्यों (यहां तात्पर्य हिंदुओं से है) में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। स्त्रियों के साथ होने वाले अनाचार को रोकने में, विधवा की स्थिति सुधारने में, बाल विवाह को रोकने में और तरह-तरह के अंधविश्वासों से हिंदू समाज को मुक्त कराने में इनका बड़ा योगदान रहा है। वे दोनों को इस बात का श्रेय भी देते हैं कि इनके प्रयत्न से ही अपने धर्म से विमुख हो रहे हिंदुओं को अपने धर्म में बनाये रखने में भी इनका बड़ा योगदान है। इसके साथ ही वे दोनों की कमजोरियों को भी सामने रखते हैं। विशेष रूप से स्वामी दयानंद के प्रयत्नों में निहित अतिवादिता की इस रिपोर्ट में आलोचना की जाती है। यह भी लिखा गया कि उन्होंने प्रायः सभी की आलोचना की और अपने समर्थन में जो बातें नहीं थीं उन्हें क्षेपक कहकर नकार दिया। यही नहीं धर्मग्रंथों की व्याख्या करते हुए जबरन नये अर्थ किये गये। उनके अनुसार, दयानंद सरस्वती ने जाल को जाल से काटने की कोशिश की इससे समाज में फूट ही पैदा हुई। इसके विपरीत केशवचंद्र सेन ने जाल को काटने का प्रयास किया यही वजह है कि केशवचंद्र सेन का ज्यादा सम्मान हुआ। रिपोर्ट ईश्वर को पेश कर दी गयी लेकिन इस पर विदेशी सदस्य ने हस्ताक्षर नहीं किये क्योंकि वे इससे सहमत नहीं थे। ईश्वर ने इस रिपोर्ट का क्या किया लेखक के अनुसार इसका पता तो तभी लगेगा जब हम स्वयं स्वर्ग में जायेंगे।

निबंध पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह एक व्यंग्य निबंध है और भारतेन्दु के समय में नवजागरण के नेताओं के बीच जो विवाद चल रहे थे, उसी को उन्होंने व्यंग्य का विषय बनाया है। इस व्यंग्य में स्वयं भारतेन्दु का झुकाव किस तरफ है, इसे भी आसानी से देखा जा सकता है।

34-4 lnHkZ lfgr 0;k[;k

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का यह निबंध 1984 में लिखा गया था। उस समय तक हिंदी गद्य की भाषा का वह परिनिष्ठित रूप विकसित नहीं हुआ था जो आज देखने को मिलता है। इसके बावजूद निबंध में प्रयुक्त विचारों और भावों को समझने में अधिक कठिनाई नहीं होती। इस भाग में हम निबंध के कुछ अंशों की व्याख्या करने का प्रयास करेंगे।

1) *''बाबा अब तो तुम लोगों की 'सैल्फगवर्नमेंट' है। अब कौन हम को पूछता है, जो जिसके जी में आता है करता है। अब चाहे वेद क्या संस्कृत का अक्षर भी स्वप्न में भी न देखा हो पर धर्म विषय पर वाद करने लगते हैं। हम तो केवल अदालत या व्यवहार या स्त्रियों के शपथ खाने को ही मिलाए जाते हैं। किसी को हमारी डर है? कोई भी हमारा सच्चा 'लायक' है?*

(निबंध के उपर्युक्त अंश की व्याख्या करने से पहले हमें यह जानना होगा कि यह अंश निबंध में किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। क्योंकि जैसाकि हम पिछली इकाइयों में भी देख चुके हैं कि किसी भी गद्यांश की व्याख्या से पहले यह जानना जरूरी है कि उक्त अंश किस संदर्भ में कहा गया है।)

lanHkZ: यह अंश भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' से लिया गया है। यह निबंध केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती के स्वर्ग में पहुंचने की स्थितियों का काल्पनिक विवरण है। वहां पृथ्वी की तरह कंजरवेटिव और लिबरल दो समूह बन जाते हैं और उनमें बढ़ते विवाद को समाप्त कराने के लिए लोग ईश्वर के पास पहुंचते हैं। उनकी बातें सुनने के बाद ईश्वर जो कहते हैं, उसी का उल्लेख इस अंश में किया गया है।

(व्याख्या का तात्पर्य है कथन में कही गयी बातों को समझाकर लिखना। इस दृष्टि से उपर्युक्त अंश को पढ़ने पर कुछ बातों की ओर ध्यान जाता है। ईश्वर को अपनी सत्ता के कमजोर होने का एहसास होता है। लोगों के मन से ईश्वर का डर खत्म हो गया है। उनका मानना है कि लोग धर्म को समझने के लिए जिन बातों की जानकारी जरूरी है, उसे जाने बिना ही उस पर वाद-विवाद करते हैं। ईश्वर का उपयोग केवल अदालतों में शपथ लेने के लिए रह गया है। लोग ईश्वर में विश्वास करने की बजाए भूतप्रेत में ज्यादा यकीन करते हैं। देखा जाए तो भारतेंदु ने ईश्वर के मुख से बहुत सी अंतर्विरोधी बातें कहलायी हैं। इन बातों की रोशनी में ही उक्त अंश की व्याख्या की जा सकती है।)

O;k[;k% ईश्वर दोनों दलों की शिकायतें सुनने के बाद उनसे अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं कि वे कुछ नहीं कर सकते। वे दोनों दल वालों से कहते हैं कि अब तो तुम्हारी अपनी सरकार है। तुम्हें अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करना चाहिए। वैसे भी आजकल ईश्वर को कौन पूछता है। किसी के मन में ईश्वर का डर नहीं रह गया है। जिसके जो मन में आता है, वह करता है। लेकिन ईश्वर इस बात पर भी अफसोस जताते हैं कि लोग उन विषयों पर बहस करते हैं जिनके बारे में वे जानते नहीं। वेद का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जो लोग संस्कृत नहीं जानते वे भी धर्म पर वाद-विवाद करते हैं। उन्हें इस बात का भी अफसोस है कि ईश्वर का नाम तो केवल अदालतों में या आम बोलचाल में शपथ लेने के लिए रह गया है। जब ईश्वर की शक्ति को कोई मानता ही नहीं तब उनके हस्तक्षेप का क्या अर्थ?

(व्याख्या के बाद गद्यांश के कुछ ऐसे पक्ष जिन्हें खासतौर पर रेखांकित करने की जरूरत है, उन्हें 'विशेष' के अंतर्गत लिखना होता है। मसलन गद्यांश के कथ्य में आया कोई विशेष संदर्भ, भाषा और शैली की विशिष्टता आदि को रेखांकित किया जा सकता है।)

fo'ks"k %

1) सेल्फगवर्नमेंट का तात्पर्य है, अपनी सरकार। यहां दरअसल शासन व्यवस्थाओं के सामंतशाही के समाप्त होने और लोकतांत्रिक व्यवस्था के आने की ओर संकेत किया गया है। जिस समय यह लेख लिखा गया तब भारत में अंग्रेजों का शासन था और सही अर्थों में लोकतंत्र नहीं आया था। लेकिन सामंतशाही समाप्त हो रही थी और स्थानीय स्तरों पर जो सेल्फगवर्नमेंट बनायी जा रही थी, उसी की ओर यहां संकेत है।
2) वेद का तात्पर्य वेदों से है, जो चार हैं। इनकी भाषा संस्कृत है। हालांकि इस संस्कृत का रूप वही नहीं है जो आज प्रयुक्त होती है।
3) ताजिया दरअसल मोहर्रम के अवसर पर निकाला जाता है। अपनी मनोकामनाएं पूरी होने की आशा में या किसी दैवीय प्रकोप से बचने के लिए हिंदू भी ताजिए की परिक्रमा करते हैं या उसके नीचे से निकलकर अपनी निष्ठा व्यक्त करते हैं। यहां इसी की ओर संकेत है।
4) भारतेंदु द्वारा लिखित इस निबंध की भाषा पर तत्कालीन खड़ी बोली का असर है। निबंध की भाषा काफी अनगढ़ है और व्याकरण संबंधी कई त्रुटियां भी देखी जा सकती हैं। दरअसल उस समय हिंदी गद्य का स्वरूप निर्मित हो रहा था।

   इस निबंध में और भी ऐसे अंश हैं जिनकी संदर्भ सहित व्याख्या की जा सकती है। ऐसा एक अंश यहां दिया जा रहा है जिनकी आप स्वयं व्याख्या कर सकते हैं।

vH;kl

1) निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

   हम लोगों की सम्मति में इन दोनों पुरुषों ने प्रभु की मंगलमयी सृष्टि का कुछ विघ्न नहीं किया वरंच उस में सुख और संतति अधिक हो इसी में परिश्रम किया। जिस चंडाल रूपी आग्रह और कुरीति के कारण मनमाना पुरुष धर्मपूर्वक पाकर लाखों स्त्री कुमार्ग गामिनी हो जाती हैं, लाखों विवाह होने पर भी जन्म भर सुख नहीं भोगने पातीं, लाखों गर्भ नाश होते और लाखों ही बाल हत्या होती हैं, उस पापमयी नृशंस रीति इन लोगों ने उठा देने में अपनी शक्यभर परिश्रम किया।

34-5 fuc/k dh vrolLrq

यह निबंध स्वामी दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन के निधन के उपरांत लिखा गया है। स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन 30 अक्टूबर 1883 को और केशवचंद्र सेन का निधन 8 जनवरी, 1884 को हुआ था। स्वयं भारतेंदु का निधन 6 जनवरी, 1885 को हुआ। इससे स्पष्ट है कि भारतेंदु ने यह निबंध 1984 में ही किसी समय लिखा होगा जब दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन दोनों का देहावसान हो चुका था। इन दोनों की मृत्यु में सिर्फ़ दो महीने का अंतर है। इसलिए इस निबंध में जो कल्पना की गयी है, वह तर्कपूर्ण है। लेखक इस निबंध में यह मानकर चल रहा है कि स्वर्ग में भी वही सब विवाद होते हैं जो पृथ्वी पर होते हैं। लोग वहां भी उसी तरह गुटबाजियों में बंटे होते हैं जिस तरह पृथ्वी पर। स्पष्ट ही स्वर्ग में ऐसा होता है या नहीं या स्वर्ग और नरक होते भी हैं या नहीं, ये सब विवाद के विषय हैं। यहां तक कि ईश्वर के अस्तित्व को लेकर भी सभ्यता के आरंभ से ही संदेह किया जाता रहा है। इसलिए इस निबंध में कही हुई बातों को लेखकीय कल्पना के रूप में ही ग्रहण किया जाना चाहिए। इस लेखकीय कल्पना का आधार भारतेन्दु के समय चल रहे विवाद हैं। उस समय बहुत से धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मसलों पर उस दौर के समाज सुधारकों और विभिन्न सामाजिक संगठनों के बीच विवाद चल रहा था। स्वामी दयानंद सरस्वती जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी और 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना की थी उनके विचार उसी दौर के कई अन्य महापुरुषों से मेल नहीं खाते थे। ब्राह्मण समाज के महान नेता और समाज सुधारक केशवचंद्र सेन उनके समकालीन थे लेकिन कई मामलों में उनका दयानंद सरस्वती से मतभेद था। इन विवादों को ही भारतेन्दु ने अपनी इस रचना का विषय बनाया है।

भारतेंदु ने बैकुंठ के लोगों को दो गुटों में बांटा है। एक, कंसरवेटिव और दो, लिबरल। दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं और उनकी आलोचना करते हैं। मसलन, कंसरवेटिव इस बात का विरोध करते हैं कि स्वामी दयानंद सरस्वती को स्वर्ग में स्थान दिया जाए। इसके लिए वे विभिन्न तर्क प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार दयानंद ने

1) पुराणों का खंडन किया।
2) मूर्ति पूजा की निंदा की।
3) वेदों का अर्थ उलटा-पुलटा कर डाला।
4) दश नियोग करने की विधि निकाली।
5) देवताओं का अस्तित्व मिटाना चाहा।
6) संन्यासी होकर अपने को जलवा दिया।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि भारतेंदु के अनुसार उपर्युक्त बातों का विरोध करने वाले कंसरवेटिव अर्थात रूढ़िवादी हैं। उन्होंने रूढ़िवादियों को परिभाषित भी किया है। उनके अनुसार रूढ़िवादी वे हैं 'जो पुराने जमाने के ऋषिमुनि यज्ञ कर करके या तपस्या करके अपने-अपने शरीर को सुखा-सुखा कर और पच-पच कर मरके स्वर्ग गए हैं उनके आत्मा का दल कंसरवेटिव है'। इसके विपरीत लिबरल यानी उदारपंथी वे हैं 'जो अपनी आत्मा ही की उन्नति सेवा और किसी अन्य सार्वजनिक उच्च भाव संपादन करने से या परमेश्वर की भक्ति से स्वर्ग में गए हैं वे लिबरल दलभक्त हैं'। इसके बाद उन्होंने दोनों दलों में शामिल और उनका समर्थन करने वालों की सूची भी पेश की है। उनके अनुसार, स्वर्ग के जमींदार इंद्र, गणेश आदि देवताओं का समर्थन प्राप्त था। इनके अलावा याज्ञवलक्य, नारायण भट्ट, रघुनंदनभट्टाचार्य, मंडन मिश्र आदि ऋषि और स्मृतिकार थे। इसके विपरीत लिबरलों में चैतन्य महाप्रभु, दादु दयाल, नानक, कबीर आदि भक्त और ज्ञानी लोग थे। लिबरलों को हिंदुओं के अलावा अन्य धर्मों के लोगों का समर्थन भी हासिल था। लेकिन भारतेंदु के अनुसार कंसरवेटिव लोगों का दल ज्यादा प्रबल था। उनका यह कहना इस अर्थ में सही है कि भारतेंदु के समय भी लिबरल विचारों के पक्षधर बहुत कम थे। लिबरल धर्म के मामले में उदार होते थे, इसलिए उनको दूसरे दलों का भी समर्थन हासिल होता था। केशवचंद्र सेन पर तो रूढ़िवादियों ने ईसाई समर्थक होने का आरोप भी लगाया था। उनके अनुसार केशवचंद्र सेन ने भारतवर्ष का सत्यानाश कर डाला। क्योंकि उन्होंने

1) वेद-पुराणों को मिटा डाला।
2) ईसाइयों और मुसलमानों को हिंदू बना डाला।

3) खान-पान का विचार नहीं किया।

4) शराब पीने को बढ़ावा दिया।

इन बातों से साफ है कि रूढ़िवादियों की नज़र में दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन दोनों ही गलत थे और उन्होंने अपने कर्मों और विचारों से हिंदू धर्म को नुकसान पहुंचाया।

इसका अर्थ यह नहीं था कि उदारपंथियों में पूरी एकता व्याप्त थी। भारतेंदु के अनुसार लिबरलों के भी दो दल बन गये थे। इनमें से एक दल दयानंद सरस्वती का समर्थन करता था और दूसरा दल केशवचंद्र सेन का। दयानंद सरस्वती के समर्थकों का मानना था कि उन्होंने आर्यावर्त यानी भारत के निंदित आलसी मूर्खों की मोह निद्रा भंग की। उन्हें मूर्ख ब्राह्मणों के फंदे से छुड़ाया। बहुत से लोगों को उद्योगी और उत्साही बनाया। दयानंद को इस बात का भी श्रेय दिया गया कि उन्होंने वेदों में रेल, तार, कमेटी, कचहरी दिखाकर आर्यों की कटती हुई नाक बचा ली। लेकिन जो केशवचंद्र सेन के समर्थक थे उन्होंने केशव को इस बात का श्रेय दिया कि उन्होंने बंगाल के लोगों को ईसाई होने से रोका। उन्होंने ज्ञानमार्ग की बजाए भक्तिमार्ग के महत्त्व को स्थापित किया। इस तरह इस निबंध के अनुसार कंसरवेटिवों और लिबरलों में तो मतभेद था ही, साथ ही लिबरलों में आपस में भी मतभेद था और वहां भी गुट बने हुए थे।

इन मतभेदों के चलते हुए ही कंसरवेटिवों और लिबरलों ने ईश्वर से फरियाद की। कंसरवेटिवों का कहना था कि केशव और दयानंद को स्वर्ग में जगह न दी जाए जबकि दूसरों का कहना था कि दोनों को स्वर्ग में सर्वोत्तम जगह प्रदान की जाए।

पहले तो दोनों दलों के प्रतिनिधि मंडल को भगवान ने इस संबंध में किसी तरह के हस्तक्षेप से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि अब मनुष्य को ईश्वर की कोई जरूरत नहीं रह गयी है। लोगों ने अपनी सरकार स्वयं बना ली है और हर मामले में वे खुद फैसला लेते हैं। फिर, धर्म और ईश्वर के मामले में किसी को भगवान की जरूरत ही नहीं रह गयी है। लोग उनके बारे में हर तरह की राय खुद दे देते हैं। ईश्वर की जगह लोग भूत-प्रेत आदि को पूजते हैं। लेकिन उनके बहुत आग्रह पर भगवान एक सिलेक्ट कमेटी बनाते हैं। इस कमेटी में राजा राममोहन राय, व्यासदेव, टोडरमल, कबीर आदि को मनोनीत किया गया। इनके अलावा मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी और अफ्रीका के प्रतिनिधि भी रखे गये और इस सिलेक्ट कमेटी को आदेश दिया कि सभी कागज और दस्तावेजों की जांच कर एक रिपोर्ट तैयार कर उन्हें सौंपे। लेख से यह स्पष्ट नहीं होता कि कमेटी को कंसरवेटिव और लिबरल के बीच विवाद को हल करना है या लिबरल के दो गुटों के बीच के विवाद को। लेकिन सिलेक्ट कमेटी केशव और दयानंद के बीच के विवाद तक ही अपने को सीमित रखती है और उन्हीं से संबंधित कागज देखती हैं और अपनी रिपोर्ट तैयार करती है।

रिपोर्ट में दोनों महापुरुषों के योगदान का प्रशंसात्मक विवरण दिया गया है। लेकिन उनका झुकाव केशवचंद्र सेन की ओर ज्यादा दिखायी देता है। जहां केशवचंद्र के बारे में फैले प्रवाद की रिपोर्ट में सफाई दी गयी है, वहीं दयानंद की कमजोरियों को रेखांकित किया गया है। निबंध के अनुसार, रिपोर्ट पर किसी अन्य धर्मावलंबियों ने हस्ताक्षर नहीं किये। संभवतः इसका कारण रिपोर्ट का हिंदू दृष्टि से लिखा जाना था।

पूरे निबंध को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध का वह दौर जब यह निबंध लिखा गया था, वैचारिक रूप से उथल-पुथल से भरा था। कई तरह के विरोधी विचारों के बीच संघर्ष देखा जा सकता था। भारतेंदु ने इन विचारों को दो समूहों में विभाजित किया है। एक, कंसरवेटिव और दूसरे लिबरल। उन्होंने ये शब्द पश्चिम से ग्रहण किये हैं जहां विचारों को इन दोनों समूहों में बांट कर देखा जाता है। कंसरवेटिव का अर्थ है रूढ़िवादी। यानी जो परंपरागत विचारों को मानते हों और नये विचारों का विरोध करते हों, उन्हें कंसरवेटिव या रूढ़िवादी कहा जाता है। भारतेंदु की यह समझ बहुत स्पष्ट थी कि जो लोग पुराने विचारों के समर्थक थे और नये विचारों का विरोध करते थे, उन्हें कंसरवेटिव कहा जाना चाहिए। इस श्रेणी के अंतर्गत उन्होंने उनको रखा जो भारतीय परंपरा के अनुसार भी रूढ़िवादी ही हैं या जिनके लिए रूढ़िवादी होना लाभप्रद है। इसलिए विभिन्न देवताओं और ब्राह्मणवादी ऋषि-मुनियों को वे कंसरवेटिव की श्रेणी में रखती हैं। इसके विपरीत वे विचारक जो ब्राह्मणवादी और रूढ़िवादी नहीं हैं, उन्हें लिबरल के अंतर्गत रखते हैं। यह महज संयोग नहीं है कि कबीर, नानक, दादू,

चैतन्य महाप्रभु को भारतेंदु ने लिबरलों की श्रेणी में रखा। हम जानते हैं कि ये सभी धर्म के रूढ़िवादी स्वरूप के समर्थक नहीं थे।

लिबरल का अर्थ है, उदार विचारों का। यानी जो नये विचारों को उदारतापूर्वक स्वीकार करता है और पुराने के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखता है। लेखक के अनुसार भी केशवचंद्र सेन और स्वामी दयानंद सरस्वती कई मामलों में रूढ़िवादी नहीं थे और नये को स्वीकार करते थे। इसीलिए वह केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती को लिबरल विचारक मानते हैं। लेकिन उनका यह भी मानना है कि लिबरलों में भी कई समूह हैं जिनमें आपस में मतभेद हैं। केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती दोनों लिबरल हैं लेकिन उनके विचारों में पूर्ण मतैक्य नहीं हैं। कई मामलों में वे एक दूसरे के विरोधी हैं। उनके अनुयायी भी इसी वजह से एक दूसरे का विरोध करते हैं। भारतेंदु ने दोनों में किन बातों पर एकता और किन बातों पर विरोध है, इसका अपने इस निबंध में उल्लेख किया है। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने लिखा कि इन दोनों महापुरुषों ने बाल विवाह, वैधव्य, अनमेल विवाह आदि कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाकर देश का भला ही किया। दोनों ने समाज को कुरीतियों और अंधविश्वासों से मुक्त कराने की कोशिश की। उनका यह प्रयत्न हिंदू समाज की रक्षा के लिए था। दोनों महापुरुषों के बीच अंतर को बताते हुए रिपोर्ट में कहा गया कि स्वामी दयानंद अपनी प्रशंसा के प्रति सचेत रहते थे और समय-समय पर अपने रूप बदलते रहे। उन्होंने वेदों से कई ऐसी बातें निकाली जो सही नहीं थी। रेल, तार आदि की बातें उन्हें ही प्रभावित कर सकती थीं जो संस्कृत नहीं जानते थे। एक जाल को काटने के लिए उन्होंने दूसरा जाल फैला दिया। इसके विपरीत केशवचंद्र सेन में ऐसी कोई बुराई नहीं थी। जो मांसादि का प्रचार करने की बात उनके बारे में कही जाती है उसके बारे में रिपोर्ट में सफाई देते हुए कहा गया कि इसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जहां तक ईसाई बनाने का सवाल है उसे वह सही नहीं मानते। इस प्रकार जहां दयानंद की कमजोरियां रेखांकित की गयी है, वहीं केशवचंद्र के बारे में फैले अपवादों की सफाई देने का प्रयत्न किया गया है।

इस निबंध को पढ़ने से साफ है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र के दृष्टिकोण में कई तरह के अंतर्विरोध भरे थे। स्वामी दयानंद सरस्वती और केशवचंद्र सेन के कार्यों की प्रशंसा करते हुए जहां वे एक तरफ हिंदू समाज को कुरीतियों से मुक्त कराने की बात करते हैं, वहीं उनकी मुख्य चिंता इस बात की है कि लोग हिंदू धर्म छोड़कर मुसलमान और ईसाई बन रहे हैं। भारतेंदु के लेखन की यह सीमा है कि जहां वे कई बातों में पोंगापंथ और रूढ़िवाद का विरोध करते हैं, तो कई मामलों में वे पुनरुत्थानवादी और सांप्रदायिक नज़रिया अपना लेते हैं। यह सीमा उनके समकालीन कई अन्य लेखकों में भी दिखायी देती है।

ck/k i'u

1. एकलिंग का मंदिर कहां स्थित है?
   क) काशी
   ख) उदयपुर
   ग) प्रयाग
   घ) हरिद्वार ( )
2. स्वामी दयानंद सरस्वती ने किस संस्था की स्थापना की?
   क) ब्राह्म समाज
   ख) प्रार्थना समाज
   ग) आर्य समाज
   घ) सत्यशोधक समाज ( )
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंध के आधार पर बताइए कि निम्नलिखित में से कौन कंसरवेटिव हैं और कौन लिबरल?
   क) कबीर .....
   ख) मंडनमिश्र .....
   ग) राजा राममोहन राय .....
   घ) याज्ञवल्क्य .....

34-6 y[kdh; 0;fDrRo dh vfHk0;fDr

भारतेन्दु एक जिंदादिल और जागरूक लेखक थे। उनके लेखन की मुख्य चिंता देशोन्नति थी। वे इसी भावना से लेखन करते थे। लेकिन देशोन्नति का अर्थ सिर्फ आर्थिक उन्नति नहीं था। भारतेंदु के समय देश पर अंग्रेजों का राज था और अभी कांग्रेस की स्थापना नहीं हुई थी। लेकिन भारतेंदु सहित बहुत से लेखकों में इस बात का एहसास था कि देश की उन्नति गुलामी में रहकर मुमकिन नहीं है। लेकिन इसके लिए यह जरूरी है कि इस बात को समझा जाए कि देश की गुलामी का कारण क्या है। भारतेंदु और उनके समकालीन लेखकों ने महसूस किया कि भारत की गुलामी का कारण धार्मिक और सामाजिक रूढ़िवादिता में निहित है। बहुत-सी ऐसी कुरीतियां हैं जिनसे मुक्त हुए बिना देश उन्नति नहीं कर सकता। दूसरी बात जो इन लेखकों ने महसूस की वह यह थी कि देश के लोगों के बीच एकता भी जरूरी है। देश विभिन्न जातियों और धर्मों में बंटा हुआ था। इन स्थितियों ने ही देश में ऐसे महापुरुष पैदा किये जिन्होंने सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई। इसका सबसे ज्यादा शिकार औरतों को होना पड़ता था। इसलिए उन्होंने औरतों को इन कुरीतियों से मुक्त कराने के लिए प्रयत्न किया। लेकिन इन महापुरुषों जिन्होंने कई संगठन भी बनाए, उनमें कई मामलों में मतभेद भी था। स्वयं भारतेंदु का दृष्टिकोण भी अपने समय के सभी महापुरुषों से मेल नहीं खाता था। यदि वे कुछ मामलों में ब्राह्म समाज के समर्थक थे, तो कुछ मामलों में आर्य समाज के। कुछ मामलों में वैष्णव थे, तो कुछ मामलों में सनातनी। इसलिए स्वाभाविक था कि उनके लेखन में तरह-तरह के अंतर्विरोध दिखायी देते हैं। इन अंतर्विरोधों को उनके इस निबंध में भी देखा जा सकता है। वैचारिक एकता के अभाव के बावजूद इन लेखकों में अपने विरोधियों की बात को भी सहज ढंग से लेने की क्षमता थी। इसके लिए वे व्यंग्य और परिहास का सहारा लेते थे।

व्यंग्य और परिहास भारतेंदु के लेखन के अनिवार्य गुण थे। यह विशेषता उनके नाटकों, कविताओं और निबंधों में भी दिखायी देती है। भारतेंदु को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है क्योंकि आधुनिक लेखन की शुरुआत उन्हीं के साथ होती है। उन्होंने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' और 'बालाबोधिनी' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन कर अपने समकालीन लेखकों को लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने स्वयं नाटक, कविताएं और निबंध लिखकर साहित्य के भंडार को समृद्ध करने का काम किया। भारतेंदु से पूर्व हिंदी साहित्य केवल पद्य में लिखा जाता था। छिटपुट अपवादों को छोड़कर हिंदी गद्य में लेखन की शुरुआत का श्रेय भारतेंदु और उनके समकालीन लेखकों को ही है। भारतेंदु के समय तक हिंदी में कविताएं ब्रजभाषा में लिखी जा रही थी, लेकिन गद्य की भाषा खड़ी बोली थी। खड़ी बोली हिंदी का कोई परिनिष्ठित रूप अभी नहीं बना था। जिस आधुनिक भावबोध और विचारबोध को इस भाषा में भारतेंदु युग के लेखक व्यक्त करना चाहते थे, उसे व्यक्त करने के लिए आवश्यक शब्दावली का निर्माण होना शेष था। यह जरूरी काम भारतेंदु और उनके समकालीन लेखकों ने किया था। इसलिए यह बहुत स्वाभाविक था कि भारतेंदु युग के लेखकों की भाषा में खड़ी बोली का वह परिनिष्ठित रूप नहीं दिखायी देता है जो बाद के लेखकों में हम पाते हैं। हिंदी का मानक व्याकरण अभी निर्मित होना था। इन मुश्किलों के बीच ही भारतेंदु युग के लेखकों ने हिंदी गद्य में अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कहने की कोशिश की।

भारतेंदु के इस लेख का विषय ही व्यंग्य और परिहासपूर्ण है। स्वर्ग में पृथ्वी जैसी स्थितियों की कल्पना कर लिबरल और कंसरवेटिव लोगों के बीच टकराव को उन्होंने अपने इस लेख का विषय बनाया है। अगर इसे स्वर्ग की बजाए पृथ्वी पर टकराव के रूप में व्यक्त किया जाता तो वैसा व्यंग्य नहीं पैदा होता जैसा अभी दिखायी देता है। जैसे कंसरवेटिव लोगों का वर्णन करते हुए वे कहते हैं, *"जो पुराने जमाने के ऋषिमुनि यज्ञ करके या तपस्या करके अपने-अपने शरीर को सुखा-सुखा कर और पच-पच कर मरके स्वर्ग गए हैं उनके आत्मा का दल 'कंसरवेटिव' है"*। स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन की संकल्पना ने ही यह संभव किया कि हजारों सालों में फैले लोगों को एक साथ स्वर्ग में दिखाया जा सका। जो महापुरुष एक दूसरे के समकालीन नहीं थे और जिनके बीच सैकड़ों सालों का अंतराल था, स्वर्ग की कल्पना के कारण ही उन्हें एक साथ दिखाया जा सका। भारतेंदु इस बात की भी कल्पना करते हैं कि जो कुछ पृथ्वी पर संभव है वह स्वर्ग में भी संभव है। इसलिए वह जैसी व्यवस्था यहां है, वैसी ही व्यवस्था स्वर्ग में भी होगी, इसकी कल्पना करते हैं। कंसरवेटिव और लिबरल के अलग-अलग दल बनना, एक ही दल में अलग-अलग गुटों का होना और उनका आपस में झगड़ना,

मामले सुलझाने के लिए अपने से ऊपर के अधिकारी के पास जाना और उनसे फैसला करवाना। अधिकारी द्वारा कमिटी बनाना और उस कमिटी की रिपोर्ट तैयार करना और उस रिपोर्ट से सबका सहमत न होना। यह पूरी व्यवस्था अंग्रेजों के समय कायम व्यवस्था का ही प्रतिरूप है और भारतेंदु ने कल्पना की है कि जो यहां हो रहा है, वह वहां यानी स्वर्ग में भी हो रहा है। इस निबंध को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु के समय तक अंग्रेजों ने अपनी शासन व्यवस्था अच्छी तरह से कायम कर ली थी और भारतवासी भी उसे पूरी तरह जान-समझ चुके थे। यह व्यवस्था सामंतकालीन व्यवस्था से बिल्कुल अलग तरह की थी। भारतेंदु ने इस व्यवस्था को भी अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। लेकिन इस व्यंग्य को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु इस व्यवस्था की आलोचना पोंगापंथी दृष्टिकोण से नहीं करते। इस छोटे से निबंध को पढ़ने से यह भी ज्ञात होता है कि भारतेंदु अपने समय के प्रति जागरूक थे और देश-विदेश के बारे में भी उनकी जानकारी काफी थी। इस व्यापक जानकारी के कारण ही इस निबंध में वे कई ऐसे संदर्भ शामिल कर सके हैं जिससे व्यंग्य और परिहास का ठोस आधार निर्मित हो सका है।

Ckk/k i:'u

4. केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती में किस ओर भारतेंदु का झुकाव अधिक दिखायी देता है?
   क) केशवचंद्र सेन की ओर
   ख) दयानंद सरस्वती की ओर
   ग) दोनों की ओर
   घ) किसी की तरफ नहीं ( )
5. इस निबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती की किन कमजोरियों का उल्लेख किया गया है? किसी एक का उल्लेख कीजिए।

   .....
   .....
   .....

34-7 l¡jpuk-f'kYi

जैसाकि इकाई के आरंभ में ही बताया जा चुका है, इस निबंध का प्रकाशन 1885 में हुआ था लेकिन इसकी रचना संभवतः 1884 में हो चुकी थी। 6 जनवरी 1885 को भारतेंदु का 35 वर्ष की अवस्था में देहांत हो गया था। खड़ी बोली में हिंदी गद्य लेखन की शुरुआत हुए अभी बहुत अधिक समय नहीं हुआ था। इसलिए हिंदी गद्य का परिनिष्ठित रूप अभी निर्मित होना शेष था। यही कारण है कि भारतेंदु के इस निबंध की भाषा में हमें अनगढ़पन दिखायी देता है। शब्दों का प्रयोग और वाक्य रचना का स्वरूप वह नहीं है जो आज हम इस्तेमाल करते हैं। बहुत से शब्द प्रयोग जो भारतेंदु के इस निबंध में मिलते हैं, अब प्रयुक्त नहीं होते। उदाहरण के लिए, निबंध की शुरुआती पंक्तियां देखें:

स्वामी दयानंद सरस्वती और बाबू केशवचंद्रसेन के स्वर्ग में जाने से वहाँ एक बेर बड़ा आंदोलन हो गया। स्वर्गवासी लोगों में बहुतेरे तो इनसे घृणा करके धिक्कार करने लगे और बहुतेरे इनको अच्छा कहने लगे।

भारतेंदु के लेख की ये आरंभिक पंक्तियां व्याकरण की दृष्टि से दोषपूर्ण नहीं है, लेकिन आज की वाक्य रचना से ये वाक्य काफी भिन्न हैं। आज का लेखक इसी बात को संभवतः इस तरह से लिखेगा :

स्वामी दयानंद सरस्वती और बाबू केशवचंद्र सेन के स्वर्ग में पहुँचने पर वहां बड़ा आंदोलन खड़ा हो गया। स्वर्गवासी लोगों में से बहुत से इनसे घृणा करने के कारण इन्हें धिक्कारने लगे और बहुत से इनको अच्छा कहने लगे।

बेर और बहुतेरे शब्द भी हिंदी के ही शब्द है जो भोजपुरी और ब्रजभाषा में प्रयुक्त होते रहे हैं, लेकिन अब इनका प्रयोग परिनिष्ठित हिंदी में कम हो गया है।

इस निबंध की भाषा तत्सम शब्दावली से युक्त है। लेकिन जरूरत के अनुसार इसमें दूसरी भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। मसलन, मुलाहिजा, अदालत, कचहरी, आमदनी, शहीद, कागज, जमींदार, खारिज, जबरदस्ती आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी के समर्थक और उर्दू के विरोधी थे। उन्होंने उर्दू का स्यापा नाम से रचना भी की थी। लेकिन यह भी सही है कि स्वयं भारतेंदु उर्दू में 'रसा' उपनाम से शायरी करते थे

और उन्हें उर्दू का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने अंग्रेजी भी सीखी थी। यही कारण है कि विषय के अनुसार इस निबंध में हम देखते हैं कि उन्होंने अंग्रेजी और उर्दू में ज्यादा प्रचलित शब्दों का भी इस्तेमाल किया। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अंग्रेजी नौकरशाही और शासन व्यवस्था का असर पैदा करने के लिए किया। मसलन, 'कसंरवेटिव', 'लिबरल', 'रेडिकल्स', सेल्फ़गवर्नमेंट', 'मेमोरियल', 'डेप्यूटेशन', 'सिलेक्ट कमेटी', 'कारस्पेंडिंग आनरेरी मेंबर', 'रिपोर्ट', 'एक्स अफीशियो मेंबर', 'एडिटर' आदि शब्दों और पदों का प्रयोग उनके अंग्रेजी ज्ञान को दर्शाता है, तो साथ ही भारतीय शासन व्यवस्था में हो रहे बदलावों को भी दिखाता है। 'कसंरवेटिव', 'रेडिकल', 'लिबरल' आदि शब्दों का संबंध तत्कालीन राजनीति से है। यह राजनीति अभी भारत में नहीं उदित हुई थी वरन यूरोप में प्रचलित थी। विभिन्न राजनीतिक दलों को इनके आधार पर ही पहचाना जाता था।

भारतेंदु की भाषा का झुकाव संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली की तरफ ज्यादा था। उन्होंने यज्ञ, तपस्या, प्रभृति, प्रचलित, बहिर्मुख, अद्वैतवादी, भाष्यकार, प्रत्युत्तर, वैमनस्य, अव्यवस्थित, बहिर्मुख, अंततोगत्वा, दुष्कर्म, क्षेपक आदि तत्सम शब्द उनके इस निबंध में प्रयुक्त हुए हैं। लेकिन तद्भव शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम है। जैसे, आलसी, सगुन, निर्गुन कुछ शब्द इस निबंध में प्रयुक्त हुए हैं।

भारतेंदु की लेखन शैली प्रभावशाली है। व्यंग्य और परिहास को पैदा करने के लिए उन्होंने कथ्य के साथ-साथ भाषा में भी व्यंजना पैदा करने की कोशिश की है। निबंध की पूरी रचना व्यंग्य से प्रेरित है। निबंध का विषय जिसमें स्वर्ग में विचार सभा के अधिवेशन की कल्पना की गयी है, वह व्यंग्य के लिए आधार तैयार करता है। इसके बाद उन्होंने यह भी कल्पना की है कि स्वर्ग में भी वैसी ही व्यवस्था कायम है जैसी पृथ्वी पर है। इसलिए वहां लोग वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा व्यवहार पृथ्वी पर लोग करते हैं। लेकिन जो व्यवहार पृथ्वी पर सामान्य माना जाता, वही स्वर्ग में परिहास और व्यंग्य पैदा करता है। मसलन, स्वर्ग में ईश्वर द्वारा अपनी असमर्थता व्यक्त करना दरअसल ईश्वर को ईश्वर कम अधिकारी या मंत्री अधिक दिखाता है। इसी तरह देवताओं को जमींदारों की तरह बताया गया है और उनकी कमजोर होती स्थिति से व्यंग्य पैदा किया गया है। स्वर्ग में भी उस तरह की राजनीतिक गुटबंदियों की कल्पना की गयी है जो पृथ्वी पर दिखायी देती हैं। इसके बाद वे उसी राजनीतिक शब्दावली का प्रयोग करते हैं जो यहां प्रयुक्त होते हैं, लेकिन उसमें स्वर्ग-नरक, बैकुंठ आदि से जुड़ी धार्मिक शब्दावली का भी प्रयोग किया गया है। राजनीतिक व्यवस्था के चित्रण के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है और धार्मिक शब्दावली के लिए संस्कृत शब्दों का। स्वर्ग की कल्पना करते हुए भारतेंदु ने धर्मों के आधार पर अलग-अलग स्वर्गों की कल्पना की है, मुसलमानी-स्वर्ग, जैन-स्वर्ग, क्रिस्तानी स्वर्ग आदि।

इस तरह यह निबधं कथ्य, भाषा और शैली तीनों स्तर पर व्यंग्य के माध्यम से अपनी बात कहने में सक्षम है। भारतेंदु का यह निबधं उनकी व्यंग्य शक्ति और भाषा और शैली की नवीनता का परिचायक है।

ck/k iz'u

6. इस निबंध को शैली की दृष्टि से किस वर्ग में रखा जा सकता है?
   - क) ललित निबंध
   - ख) विचार निबंध
   - ग) भावात्मक निबंध
   - घ) व्यंग्य निबंध ( )

7. इस निबंध में अंग्रेजी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग क्यों किया गया है? दो कारण बताइए।

   ....

   ....

8. इस निबंध में भारतेंदु की भाषा का झुकाव किस तरफ दिखायी देता है?

   ....

   ....

34-8 ifrik|

भारतेंदु हरिश्चंद्र का यह निबंध उनके दौर में चल रहे राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक संघर्ष को दर्शाता है। वह नवजागरण का दौर था जिसकी शुरुआत राजा राममोहन राय (1772-1833) से हुई थी। इनके अलावा केशवचंद्र सेन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, स्वामी दयानंद सरस्वती सर सैयद अहमद खां आदि ने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक और

धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष चलाया और देश को पोंगापंथ और पिछड़ेपन से मुक्त कराने का प्रयास किया। जिस समय राजा राममोहन राय ने धार्मिक और सामाजिक सुधारों के लिए आवाज उठायी उस समय भारत में जातिवाद, अंधविश्वास, छुआछूत, सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा प्रथा, वैधव्य, अशिक्षा आदि कई कुरीतियां व्याप्त थीं। इन सामाजिक और धार्मिक बुराइयों से मुक्त हुए बिना देश न तो आधुनिक बन सकता था और न आजाद हो सकता था। समाज सुधार लाने के लिए इन महापुरुषों ने कई तरह के संगठन बनाये इनमें ब्रह्म समाज और आर्यसमाज का असर हिंदी क्षेत्र पर काफी था। भारतेंदु इसी नवजागरण के दौर की उपज थे और उन पर उस समय के सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों का गहरा असर था।

यह समझना भूल होगी कि उस दौर के सभी समाज सुधारक और महापुरुषों के बीच सभी बातों पर मतैक्य था। उनमें परस्पर बहुत सी बातों पर मतभेद था। मसलन, ब्रह्म समाज और आर्यसमाज का सोच एक सा नहीं था। आर्य समाज कई मामलों में पुनरुत्थानवादी था। उनका मानना था कि वेदों का समय ही स्वर्ण युग था यहां तक कि विमान, रेल आदि उस युग में भी थे। जबकि ब्रह्म समाज इस तरह की बातों में यकीन नहीं करता था।

उस समय देश अंग्रेजों के अधीन था और भारतीयों को अपनी सरकार चुनने का अधिकार नहीं था। भारतवासियों पर कई तरह के प्रतिबंध लगे हुए थे। लेकिन शिक्षित भारतीय ब्रिटेन और यूरोप में चल रही राजनीति से परिचित थे और उसका असर उन पर भी दिखायी देता था। इस निबंध में भारतेंदु ने एक ओर नवजागरण के दौर की स्थितियों और दूसरी ओर इंगलैंड की राजनीति का इस्तेमाल किया है। लिबरल और कंसरवेटिव की चर्चा दरअसल उस समय की ब्रिटिश राजनीति का असर है। लेकिन इसका प्रयोग सामाजिक और धार्मिक मामलों में भी किया जाता रहा है। कंसरवेटिव का अर्थ होता है रूढ़िवादी और लिबरल का अर्थ होता है उदारवादी। यानी कि जो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मामलों में केवल अपने मत को सही मानता हो और दूसरे के मतों के प्रति असहिष्णु हो उसे कंसरवेटिव कहा जाता था। आज भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त होता हे। इसके विपरीत लिबरल अपने मत के प्रति दुराग्रही नहीं होता। वह दूसरे मतों को भी सम्मान देता है और सही प्रतीत होने पर उसे स्वीकार भी कर लेता है। इस तरह कंसरवेटिव रूढ़िवादी और पोंगापंथी होता है जबकि लिबरल आधुनिक और नवीन विचारों का समर्थक होता है। निबंध को पढ़ने से स्पष्ट है कि भारतेंदु का झुकाव लिबरल मत की तरफ ज्यादा है। लेकिन लिबरल मत में भी कई तरह की धाराएं हैं और इसे भारतेंदु अपने इस निबंध का विषय भी बनाते हैं। भारत के संदर्भ में वे ब्रह्म समाज और आर्य समाज दोनों को उदारवादी मानते हैं और सामाजिक बदलाव में उनके योगदान की प्रशंसा भी करते हैं। लेकिन आर्य समाज की तुलना में वे ब्राह्म समाज को ज्यादा उपयुक्त मानते हैं। आर्य समाज में पुनरुत्थान का जो प्रभाव है, उसे वह उचित नहीं मानते और उसकी आलोचना करते हैं। इसके बावजूद निबंध में धर्म के बारे में कई जगह जो टिप्पणियां की गयी हैं, वह स्वयं भारतेंदु के दृष्टिकोण में निहित अंतर्विरोधों को ही दर्शाता है।

cks/k iz'u

9. इस निबंध का संबंध आधुनिक भारत के किस दौर से है?
   क) भक्तिकाल से
   ख) रीतिकाल से
   ग) नवजागरण काल से
   घ) किसी दौर से नहीं ( )

10. नवजागरण दौर में समाज सुधारकों ने निम्नलिखित में से किस प्रथा का समर्थन किया?
    क) बाल विवाह
    ख) अनमेल विवाह
    ग) विधवा विवाह
    घ) बहु विवाह ( )

vH;kl

2. कंसरवेटिव और लिबरल को परिभाषित करते हुए बताइए कि भारतेंदु को पठित निबंध के आधार पर किस श्रेणी में रखेंगे और क्यों ?
3. रूढ़िवाद के समर्थकों ने केशवचंद्र सेन और दयानंद सरस्वती के स्वर्ग भेजे जाने का विरोध क्यों किया?
4. पठित निबंध में प्रयुक्त भाषा और शैली पर टिप्पणी लिखिए।

34-9 lkjka'k

हिंदी गद्य के इस पाठ्यक्रम का यह छठा खंड है। इस छठे खंड की दूसरी इकाई और पाठ्यक्रम की 34वीं इकाई में भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यंग्य निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' का अध्ययन किया है। भारतेंदु के इस निबंध में स्वर्ग की कल्पना करते हुए कंसरवेटिव और लिबरल के बीच के मतभेदों और लिबरल के ही अलग-अलग गुटों के बीच के भेदों को रचना का विषय बनाया है। इस इकाई को पढ़ने से आप कंसरवेटिव और लिबरल यानी रूढ़िवादी और उदारवादी के अर्थ को भारतीय संदर्भ में समझ सकते हैं।

- भारतेंदु ने इस निबंध में अपने समय में हो रहे धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का परिचय दिया है और साथ ही उनके आपसी अंतर्विरोधों का भी उल्लेख किया है। इससे आप तत्कालीन समाज की वास्तविक स्थिति का भी ज्ञान हासिल कर सकते हैं।
- भारतेंदु के समय खड़ी बोली गद्य अपनी आरंभिक अवस्था में था। उसका वह परिनिष्ठित रूप नहीं था जो द्विवेदी युग में निखर कर सामने आया। लेकिन भारतेंदु युग के लेखकों ने भी हिंदी को रचनात्मक और संप्रेषणीय बनाने का जो प्रयास किया, वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारतेंदु का यह निबंध भी इस बात का प्रमाण है। आप निबंध की भाषा की विशेषताएँ बता सकते हैं।
- भारतेंदु ने निबंध के लिए व्यंग्य की जो शैली अपनायी है, उसने विषय को रोचक, प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाने में अहम भूमिका निभायी है। अपनी बात कहने के लिए व्यंग्य का रचनात्मक इस्तेमाल भारतेंदु युग के लेखन की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

इकाई पढ़कर आप भारतेंदु के गद्य साहित्य विशेष रूप से उक्त निबंध को समझने में आपको पर्याप्त सहायता मिलेगी।

34-10 'kCnkoyh

dalj ofVo % अंग्रेजी शब्द। हिंदी में इसे रूढ़िवादी, परंपरावादी कहा जाता है। कंसरवेटिव ऐसे लोगों को कहा जाता है जो परिवर्तन और नवीनता के विरोधी होते हैं और परंपरागत मूल्यों में ही यकीन रखते हैं और अपने विचारों को लेकर असहिष्णु होते हैं।

fycjy % अंग्रेजी शब्द। हिंदी में उदारपंथी या उदारवादी कहा जाता है। उदारवाद पश्चिम की एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक विचारधारा है। उदारपंथी ऐसे लोगों को कहा जाता है जो बदलाव और नवीनता में यकीन रखते हैं और खुले विचारों के होते हैं। दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णु होते हैं।

o".ko % हिंदू धर्म में विष्णु को ईश्वर का सर्वोच्च रूप मानने वाले और उनकी भक्ति करने वाले वैष्णव माने जाते हैं। विष्णु के दसों अवतारों में भी इनका विश्वास होता है।

iHkfr % इत्यादि, वगैरह।

jfMdy % अंग्रेजी शब्द जिसका हिंदी में अर्थ है, मूलगामी। यानी ऐसा व्यक्ति जो किसी भी तरह की व्यवस्था को जड़ से बदलने का समर्थक होता है।

O;klno % हिंदू धर्म से जुड़ा एक प्रख्यात पौराणिक चरित्र जिन्हें व्यास और वेदव्यास के नाम से जाना जाता है। यह माना जाता है कि वेदव्यास ने ही महाभारत की रचना की। यह भी माना जाता है कि वेदव्यास ने ही पुराणों की भी रचना की है।

cfy % ईश्वर या देवताओं को चढ़ाया जाने वाला चढ़ावा।

eku % प्रतिष्ठा, सम्मान।

cdqB % मूल शब्द वैकुंठ जिसका अर्थ है विष्णुलोक या स्वर्ग। इस निबंध में स्वर्ग और वैकुंठ को अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त किया है। यहां वैकुंठ का अर्थ है, ईश्वर का निवास स्थान।

on % वेद का अर्थ ज्ञान भी होता है और हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथ के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। वेद चार माने जाते हैंः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन है और अथर्ववेद सबसे नया है।

iqjk.k % पुराण का शाब्दिक अर्थ है, पुराना या प्राचीन। लेकिन हिंदू धर्म से संबंधित उन ग्रंथों को भी पुराण कहा जाता है जिनमें सृष्टि के आरंभ से लेकर अंत तक की कथा कही गयी हैं। इनमें वर्णित चरित्र मिथकीय हैं और उनकी कथाएं भी। आमतौर पर पुराणों की संख्या अठारह मानी जाती हैं।

,dfyaxth % राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित एक मंदिर जो उदयपुर के राजपरिवार से संबंधित माना जाता है। एकलिंग जी शिव का ही एक रूप है और इस निबंध में उसी की ओर संकेत है।

vk;kZoÙkZ % संस्कृत ग्रंथों में प्रयुक्त उत्तर भारत का एक नाम।

;kKoYD; % एक वैदिक ऋषि जिनका उल्लेख बृहदारण्यक उपनिषद और शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। याज्ञवल्क्य की दो पत्नियां थीं, गार्गी और मैत्रेयी। याज्ञवल्क्य ने राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ में भाग लिया था।

eaMu feJ % आठवीं सदी के संस्कृत के विद्वान और आदि शंकराचार्य के समकालीन।

pSrU; % चैतन्य को चैतन्य महाप्रभु (1486-1534) के रूप में भी जाना जाता है। पूर्वी भारत में कृष्ण भक्ति का प्रचार किया।

v}Srokn % अद्वैतवाद भारतीय दर्शन की एक महत्त्वपूर्ण शाखा जिसके प्रणेता आदि शंकराचार्य थे। अद्वैतवाद के अनुसार केवल ब्रह्म (ईश्वर) ही सत्य है और संसार मिथ्या है। संसार की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है।

j?kquUnu
HkV~Vkpk;Z % पंद्रहवी-सोलहवीं सदी के संस्कृत के प्रख्यात विद्वान।

lSYQ xoueZaV % अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ है, स्व सरकार या स्वशासन। सेल्फ गवर्नमेंट ऐसी सरकार की संकल्पना है जहां किसी क्षेत्र विशेष के लोग (वह क्षेत्र पंचायत से लेकर राष्ट्र तक हो सकता है) स्वयं अपनी सरकार चुनते हैं और जनता के बनाये नियमों के अनुसार सरकार कार्य करती है।

ludkfn % हिंदू पुराणों के अनुसार चार बालक ऋषि (सनक, सनातन, सनादन और सनत कुमार) जिनका जन्म ब्रह्मा के मस्तिष्क से हुआ था। पुराणों के अनुसार चारों जीवन पर्यंत ब्राह्मचर्य का पालन करते रहे, वेदों का अध्ययन किया और उसकी शिक्षा का प्रचार किया।

t; fot; % दो हिंदू पौराणिक चरित्र जो विष्णु के निवास वैकुंठ के द्वारपाल थे। लेकिन जिन्हें सनकादि ऋषियों के श्राप के कारण तीन जन्मों तक विष्णु के शत्रु के रूप में जन्म लेना पड़ा।

}Sr % दो होने का भाव। अद्वैतवाद की तरह द्वैतवाद भी भारतीय दर्शन का एक सिद्धांत जिसके अनुसार ईश्वर और जगत या आत्मा और परमात्मा दोनों अलग-अलग की सत्ता और सत्य है।

ikjlukFk % इन्हें पार्श्वनाथ भी कहा जाता है और जैन मत के अनुसार यह 23वें तीर्थंकर थे। महावीर स्वामी को 24वां और अंतिम तीर्थंकर माना जाता है। महावीर गौतम बुद्ध के लगभग समकालीन थे जबकि पार्श्वनाथ ईसा से आठवीं-नवीं शताब्दी पूर्व हुए थे।

ukxktZqu % ईसापूर्व दूसरी शताब्दी के महान बौद्ध दार्शनिक जिन्होंने महायान संप्रदाय की स्थापना की।

34-11 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

Ckks/k iz'uksa ds mÙkj

1. (ख) 2 (ग)
3. (क) लिबरल (ख) कंसरवेटिव
   (ग) लिबरल (घ) कंसरवेटिव
4. (क)
5. स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों में रेल, तार, कचहरी आदि खोज ली जो भारतेंदु के अनुसार गलत व्याख्या पर आधारित है।
6. (घ)
7. अंग्रेजों के शासन व्यवस्था की कल्पना वे बैंकुठ में भी करते हैं और उसे बताने के लिए भारतेंदु ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है।
   इस तरह वे अंग्रेजों के शासन को अपने व्यंग्य का निशाना भी बनाते हैं।
8. संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली की तरफ।
9. (ग) 10 (ग)

vH;klksa ds mÙkj

अभ्यासों का उत्तर इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़कर स्वयं लिखिए।